स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में मानवीयता

डॉ. जालिंदर इंगले
शोध निर्देशक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
म. स. गा. महाविद्यालय, मालेगांव कैम्प, तह. मालेगांव, जिला नासिक

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में मानवतावाद परिलक्षित होता है। सृष्टि के विकास के साथ–साथ मनुष्य का भावात्मक एवं बौद्धिक विकास हो रहा है। देश की आजादी के बाद की कविताओं में मानवतावाद की चर्चा की गई है, जिसमें मानवता का संदेष प्रमुख है। एक–दो दशकों बाद रची गई कविताओं में मानव अस्तित्व की बात को प्रबलता के साथ उठाया गया है। इस अस्तित्ववादी विचारधारा ने मानव की प्रतिष्ठा को ईश्वर से अधिक मान्यता प्रदान की है। कहने का तात्पर्य यह कि मानवीयता को सर्वोपरी माना गया हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल के कवियों ने मानवतावाद पर बल देते हुए उसको अपनी कविता का विषय बनाया है। नवीन मानवतावादी विचार भूमि के परिप्रेक्ष्य में ऐसे मानव की कल्पना नहीं की हैं, जो स्वयं की पुरूषार्थ के बल से नियंता बन गया है। मानवतावाद ने थोडे बहुत अंतर से ईश्वर की सत्ता को सदैव माना है। इसलिए कवियों ने मानवता की मूल्यवत्ता को तमाम मानवीय गुणों का स्त्रोत मानते हुए जीवन की नैतिकता और अनैतिकता में स्पष्ट रूप से भेद प्रकट करते हुए कविता का निर्माण किया है। स्वातंत्रता के बाद तमाम कवियों ने मानवीय जीवन में मूल्यगत सौंदर्य की आवश्यकता को समझाते हुए उत्कृष्ट से उत्कृष्ट विषय को उठाकर मानव के वर्तमान एवं भविष्य की मंगलमयता पर विचार करते हुए मूल्यों की अनिवार्यता एवं व्यावहारिकता को अपनी कविता के माध्यम से उजागर किया है।

स्वातंत्र्योत्तर कविता ने नवीन भाव–बोध का केंद्र समकालीन मानव और उसकी परिस्थितियों को माना है। स्वातंत्र्योत्तर कविता की सौंदर्य चेतना यथार्थ से प्रभावित है। संवेदना के विविध आयामों में सौंदर्यगत मानव–मूल्यों की अभिव्यक्ति आधुनिक मानव के समकालीन परिवेश के जीवन यथार्थ से संबंद्ध है। काव्य कैसा भी हो उसमें निश्चित रूप से सौंदर्यगत मानव–मूल्य होते है। वास्तव में सत्यम्–शिवम्–सुंदरम् से युक्त काव्य ही उच्च कोटि का माना जाता है। आधुनिक युग की चेतना ने काव्याभिव्यक्ति में कई तरह की विविधता भर दी है। स्वातंत्र्योत्तर कविता की सौंदर्य चेतना नीत नये रूपों को ग्रहण करती रही है। स्वातंत्र्योत्तर कविता की बहुआयामी संवेदना में सौंदर्यगत मानवीय मूल्य कई दृष्टियों से परम्परा युक्त भी है और परम्परा मुक्त भी। कहने का तात्पर्य यह कि स्वातंत्र्योत्तर कवियों ने मानव–मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में परम्परा से संबंध सौंदर्यगत मानवीय मूल्यों को भी स्वीकार किया गया और आधुनिक जीवन संदर्भ में नवीन मूल्यों की तलाश एवं स्थापना का प्रयास भी किया है। जादा तर परम्परागत मूल्यों की सौंदर्य चेतना को परिवर्तित रूप में ही अभिव्यक्त किया है–

"दिये दरस सीता ने वे है गौरव की गंभीर सी मूर्ति
उन्हें देख मन में कुछ भय, कुछ आदर की होती है स्फूर्ति।"

यहाँ कवि ने नारी के मानवीय अस्तित्व के गौरव की गंभीरता को दर्शाया है। ऐतिहासिक पात्र सीता में भारतीय नारी के शील आदि मूल्यों के सहज प्रवृत्ति को दर्शाया है। स्त्री–पुरूषों

Scanned with CamScanner

के संबंधों के बीच रागात्मक विषम आकर्षण में अद्वितीय सौंदर्यगत मानव–मूल्य है। स्वातंत्र्योत्तर कवि ने ऐसे विषम आकर्षण के सौंदर्य को मूल्य मर्यादा की भीत पर चित्रित किया है–

"बीच खडी है हम दोनों के । अभी न जाने कितनी शर्तें।
अभी बहुत दिन करनी होगी । केवल इन गीतों में बातें।"

कुछ मूल्य ऐसे है, जिन्हें परम्परागत रूप से प्राप्त किया जाता है। स्त्री–पुरुष के बीच मर्यादा, शीलता और लज्जा जैसी धारणाएँ मूल्यों के रूप में ही परिचालित होती है। सामाजिक मानवीय संबंधों में ऐसे अनेक मूल्य होते है, जिसकी भावुकता अत्यंत पवित्रता से अपूरित होती है

"भद्रे ! तुम पवित्र यह वहिन शिखा। जो कहीं चेतन, कहीं प्रतिमा, कहीं श्रध्दा। जो कहीं साधना, स्वस्ति, स्वधा, स्वाहा को जो कहीं ।"

यहाँ केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' ने शिवाजी महाराज की माता के ऐसे चित्र को प्रस्तुत किया है, जिसमें नारी का गौरव, तमाम मानवीय मूल्यों के शिकर पर आरूढ होता है। भारतीय संस्कृति के आरंभिक काल से ही माँ के रूप में नारी का व्यकित्व संपूर्णता प्राप्त करता है, जिसमें विभिन्न मानवीय–मूल्यों का सौंदर्य सहजरूप से दिखाई देता है। ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से एक ओर नारी के उस व्यक्तित्व का चित्रण किया है। जिसमें भौतिक मूल्य समाहित है। कुछ ऐसे चित्रण भी किए गए है, जिसमें नारी के व्यक्तित्व में आध्यात्मिक मूल्यों की परिणति हुई है।

स्वातंत्र्योत्तर कविता में मूल्यों के अस्तित्व संकट की बात पर बराबर ध्यान दिया गया है। यदि मनुष्य जीवन में सत्य की स्वीकृति सहर्ष स्वीकार करता है तो उसके जीवन में शीव का अविर्भाव स्वतः हो जाता है और सौंदर्य बोध उपर्युक्त प्रवृत्ति के साथ छाया की तरह चला जाता है। सारतः मनुष्य के जवीन में सत्य सभी मूल्यों की अग्रज है। मानवजीवन से सत्य जैसे–जैसे दूर होता जाता है वैसे ही वैसे जीवन में मूल्य हीनता बढती जाती है। कवि कहता है –

"मूल्य और मानवी उदात्ताएँ। जब सार्वजनिक जीवन में हो जाती है शेष तभी होता है युद्ध, युद्ध का घोष, युधिष्ठिर हों या हो कृष्ण।"

सत्य की भाँति सौंदर्य भी शाश्वत मूल्य है। कवि का अंतर्मन जब सौंदर्य संवेदना से अनुप्रणित हो जाता है तब उसकी दृष्टि में सौंदर्य विस्तृत हो जाता है और कभी–कभी तो उसकी दृष्टि सौंदर्यानुभूति की अलौकिक झलक देने लगती है।

स्वातंत्र्योत्तर काल के जादात्तर कवियों ने आम जीवन और उसके परिवेष को ही अपनी कविता का विषय बनाया है। विषयगत अर्थवत्ता में कवि की चिंता मानवीय मूल्यों को लेकर बराबर बनी हुई है। आज की कविता के सामने एक ओर स्वयं के तथा दूसरी ओर मानवता के अस्तित्व को बचाये रखने का संकट है। आधुनिक जीवन की गतिशीलता में म नव का दृष्टिकोन निरंतर वस्तुपरक हो रहा है। वहीं दूसरी ओर नैसर्गिक सौंदर्य की जीवन से संबंद्धता बनाये रखने का भी प्रयास किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर काल के जादात्तर कवियों ने आज जीवन और उसके परिवेश को ही अपनी कविता का विषय बनाया है। विषयगत अर्थवत्ता में कवि की चिंता मानवीय मूल्यों को लेकर बराबर बनी हुई है। आज की कविता के सामने एक ओर स्वयं के तथा और दूसरी ओर मानवता के अस्तित्व को बचाये रखने का संकल्प है। आधुनिक जीवन की गतिशीलता में मानव का दृष्टिकोण निरंतर वस्तुपरक हो रहा है, ऐसी स्थिति में मानवता को

Scanned with CamScanner

ममता रख पाना काफी कठीन मामला है।

स्वातंत्र्योत्तर कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से मानवीय मूल्यों को सुरक्षित रखने के लिए हर संभव प्रयास किया है। 'बालकृष्ण शर्मा नवीन' ने अपने 'उर्मिला' काव्य में मानवियता के संदर्भ में काफी महत्वपूर्ण चित्रण किया है। इस काव्य में अंततक मानवतावाद को देखा जा सकता है। वन में रहनेवाले अशिक्षित, ज्ञान के अभाव में आशंका और भय से घिरे हुए अंधविश्वासी मानवों के रक्षणार्थ लक्ष्मण का वन जाना श्रेयस्कर समझते है। अमानवीय जीवन जिने वाले मानवों के हितार्थ उर्मिला लक्ष्मण को सहर्ष अनुमति देती है; उसका हृदय मानवीय दृष्टि से ओत–प्रोत है। मानवता के प्रति उसका लगाव प्रशंसनीय है।

स्वातंत्र्योत्तर काल के कवियों ने मानव से संबंधित तमाम मूल्यों की तलाश करते हुए उसके सौंदर्यभाव को जीवन में प्रति स्थापित करने का प्रयास किया है। सातवे दशक और उसके बाद की कवितोओं में प्रकृति के विभिन्न उपयोगों से बिम्ब एवं प्रतीक का प्रयोग किया है। उदा: "इस चिडियों का आवाज। आग लगने के बाद। जंगल में । आग लगने से पहले के जंगल को खोज रही है।"

कवि ने यहाँ मानवता की अंतरकर्राह को महसुस किया है। उसने हर ऐसे मानव की अंतरव्यथा को समझा है, जिसका जीवन दो जून की रोटी के हक के लिए निरंतर संघर्षरत है, फिर भी उसे वह उपलब्ध नहीं होती। मानवता की पक्षधरता में मूल्य सौंदर्य को जनानेवाले तमाम कवियों की कविता में इस तरह के अनेक उदाहरण मिल जाते है। जीवन के ज्वलंत यथार्थ को अभिव्यक्त करने के पीछे कवि की मंशा स्पष्ट दिखाई देती है। वह जीवन की अनियमित व्यवस्थाओं के नग्न चित्र प्रस्तुत करके उनमें मूलभूत सुधार करने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ :–

1) प्रणय पत्रिका गीत – हरिवंशराय बच्चन, पृ. क. 27

2) राष्ट्रपुरूष द्वीतीय सत्र – केदारनाथ मित्र प्रभात, पृ. क. 28

3) महाप्रस्थान – नरेश मेहता – पृ. क.44

4) बची हुई पृथ्वी – लीलाधर जगूडी, पृ. क. 47

5) घबराए हुए शब्द – लीलाधर जगूडी, पृ. क. 38

Scanned with CamScanner